पांच तत्व छठी आतमा, सास्त्र सबों ए मत।
यों निरमान बांध के, ले सुपन किया सत।। ३५ ।।

पांच तत्व तथा छठा जीव से बना शरीर सपने का है, इसको शास्त्रों में अपने मत में सत कहा है।

देखे सातों सागर, और देखे सातों लोक।
पाताल सातों देखिया, जागे पीछे सब फोक।। ३६ ।।

मैंने सातों सागरों को देखा (लवण, इक्षु रस, मधु, घृत, दधि, क्षीर, मीठा पानी) तथा सातों लोकों (भूलोक, भुवर्लोक, स्वर्गलोक, महर्लोक, जनलोक, तपलोक और सतलोक (बैकुण्ठ)), सातों पातालों (अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल, और पाताल) देखा, परन्तु यह सब माया के हैं। पल में प्रलय में आने वाले हैं।

।। प्रकरण ।। १७ ।। चौपाई ।। ४३१ ।।

प्रकरण अवतारों का

ए ऐसा था छल अंधेर, काहूं हाथ न सूझे हाथ।
बंध पड़े दृष्ट देखते, तामें आया सारा साथ।। १ ।।

इस अज्ञानता से भरे हुए संसार में जहां पर परब्रह्म की कोई सुध देने वाला नहीं है, जहां माया को देखते ही ऐसे बंध में पड़ जाते हैं, उसे देखने के लिए परमधाम से सुन्दरसाथ (ब्रह्मसृष्टि) आए।

तो पिया मिने आए के, सब छुड़ाई सोहागिन।
बोए के नूर प्रकासिया, बीज ल्याए मूल वतन।। २ ।।

पिया ने अपनी ब्रह्मसृष्टियों को यहां खेल में आकर जागृत बुद्धि देकर माया से छुड़ाया। पिया ने मूल घर परमधाम से तारतम वाणी के ज्ञान का बीज लाकर सारे संसार में जागृत बुद्धि के ज्ञान का उजाला किया।

ए खेल किया तुम खातिर, तुम देखन आइयां जेह।
खेल देख के चलसी, घर बातां करसी एह।। ३ ।।

हे साथजी! यह खेल तुम्हारे लिए बनाया है इसे आप देखने आए हैं। इस खेल को देखकर हम वापस घर चलेंगे और घर चलकर क्या खेल देखा, इस पर बातें करेंगे।

तुम खेल देखन कारने, किया मनोरथ एह।
ए माप्या तुम वास्ते, कोई राखूं नहीं संदेह।। ४ ।।

तुमने खेल देखने की परमधाम में चाहना की थी, इसलिए अब तुम्हारे वास्ते यह खेल धनी ने बनाया और तुम्हारे वास्ते ही बेशक वाणी लाए हैं जिससे सारे संशय मिट जाएं।

ए खेल सांचा तो देख्या, जो अखंड करूं फेर।
पार वतन देखाय के, उड़ाऊं सब अंधेर।। ५ ।।

इस खेल का देखना तभी सत्य होगा जब इसे दुबारा अखण्ड करूं (पहला बृज का ब्रह्माण्ड अखण्ड हो चुका है)। अब तारतम वाणी के बल से **अक्षर** के पार का अपना घर दिखा करके सब अज्ञानता दूर कर देंगे।

Nijanand App

ए दसों दिस लोक चौदके, विचार देखे वचन।
मोह सागर मथ के, काढ़े सो पांच रतन।।६।।

इस संसार के चौदह लोकों की दसों दिशाओं में फैले सब ज्ञान के वचनों को देखा। ऐसे भवसागर के फैले ज्ञान का मंथन करके पांच रत्न (अक्षर की पांच वासनाओं) की जानकारी पायी।

पेहेले कहे मैं साथ को, इन पांचो के नाम।
सुकदेव और सनकादिक, कबीर सिव भगवान।।७।।

मैंने इन पांचों के नाम सुन्दरसाथ को पहले भी बताए हैं। इनमें एक शुकदेवजी, दूसरे सनकादिक ऋषि (सनक, सनन्दन, सनातन, सनतकुमार), तीसरे कबीर, चौथे शिवजी तथा पांचवें भगवान विष्णु हैं।

नारायन विष्णु एक अंग, लखमी याथें उतपन।
एह समावे याही में, ए नहीं वासना अन।।८।।

नारायण तथा विष्णु एक ही रूप हैं और लक्ष्मीजी की उत्पत्ति भी इन्हीं से हैं। यह सभी एक ही स्वरूप नारायण में समा जाते हैं, यह जुदा नहीं हैं।

और एक कागद काढ़िया, सुकदेवजी का सार।
हदियों का कोहेड़ा, बेहदी समाचार।।९।।

इस संसार में से एक और ग्रन्थ मिला जिसमें शुकदेवजी की वाणी का सार है। यह संसार के जीवों को धुंध के समान है, क्योंकि संसार के जीवों की उत्पत्ति निराकार से है। इस भागवत में बेहद का ज्ञान है जो ब्रह्मसृष्टि तथा ईश्वरी सृष्टि को बेहद की खबर देने वाला है।

अवतार चौबीस विष्णु के, बैकुंठ थें आवें जाएं।
ए बिध जाहेर त्यों करूं, ज्यों सनंध सब समझाए।।१०।।

इस संसार में चौबीस अवतार विष्णु के बैकुण्ठ से आते जाते हैं। इसकी भी हकीकत बताती हूं जिससे सबको पूर्ण ज्ञान का पता चल जाए।

अवतार एकैस इनमें, तिन आड़ा हुआ कल्पांत।
और कहावें तीन बड़े, भी कहूं तिनकी भांत।।११।।

इन चौबीस में से इक्कीस अवतार हो जाने के बाद संसार का प्रलय हो गया। अब शेष तीन बड़े अवतारों की हकीकत बताती हूं।

अवतार एक श्रीकृष्ण का, मूल मथुरा प्रगट्या जेह।
दीदार देवकी वसुदेव को, दिया चतुरभुज एह।।१२।।

इनमें मथुरा की जेल में प्रकट होने वाला एक अवतार श्री कृष्ण का है। जिसने चार भुजा (चतुर्भुज) स्वरूप धारण कर वसुदेव और देवकी को दर्शन दिया।

वचन कहे वसुदेव को, फिरे बैकुंठ अपनी ठौर।
पीछे प्रगटे दोए भुजा, सो सरूप सनंध और।।१३।।

वसुदेव और देवकी को पूर्व जन्म की तपस्या और वरदान की याद दिलाकर और अब मेरे जन्म के बाद क्या करना है कहकर बैकुण्ठ गए। यह एक अवतार हुआ। इसके बाद दो भुजा वाला स्वरूप प्रकट हुआ। इस स्वरूप की हकीकत अलग है (गोलोक की शक्तियों ने इस तन में जेल में ही प्रवेश किया)।

Nijanand App

वसुदेव गोकुल ले चले, ताए न कहिए अवतार।
सो तो नहीं इन हद का, अखंड लीला है पार।। १४ ।।

वसुदेवजी इस दो भुजा के स्वरूप को लेकर गोकुल में नन्द के घर पहुंचाने गए। गोलोक शक्ति होने के कारण इन्हें भगवान विष्णु का अवतार नहीं कहना। यह इस संसार के नहीं हैं। इनकी लीला सबलिक ब्रह्म में अखण्ड है।

ए कही सब तुम समझने, भानने मनकी भ्रांत।
बेहद विस्तार है अति बड़ा, या ठौर आड़ा कल्पांत।। १५ ।।

तुम्हारे मन के संशय मिटाने के लिए तथा तुम्हें समझाने के लिए बताया है। बेहद का ज्ञान बहुत भारी है। यह संसार प्रलय के अन्दर आता है, अर्थात् बनता और मिटता है।

भी कहूं तुमें समझाए के, तुम भानो धोखा मन।
अवतार सो अक्रूर संगे, जाए लई मथुरा जिन।। १६ ।।

तुम्हें और भी स्पष्ट बताती हूं जिससे तुम्हारे मन में किसी प्रकार का संशय बाकी न रह जाए। इसी गोलोक की शक्ति वाले स्वरूप को अक्रूरजी मथुरा ले गए।

इनमें भी है आंकड़ी, बिना तारतम समझी न जाए।
सो तुम दिल दे समझियो, नीके देऊं बताए।। १७ ।।

इसमें भी आंकड़ी है (भेद है)। जो बिना तारतम वाणी के समझ में नहीं आ सकती, इसलिए सुन्दरसाथजी! ध्यान से समझना मैं अच्छी तरह से बताती हूं।

सात चार दिन भेख लीला, खेले गोवालों संग।
सात दिन गोकुल मिने, दिन चार मथुरा जंग।। १८ ।।

सात दिन इस गोकुल में तथा चार दिन इस मथुरा में ग्वाल के में भेष गोलोक की शक्ति से ग्वालों में रहे। गोकुल में सात दिन लीला की तथा मथुरा में चार दिन युद्ध किया।

धनक भान गज मल मारे, तब हुए दिन चार।
पछाड़ कंस वसुदेव छोड़े, या दिन थें अवतार।। १९ ।।

धनुष तोड़ा, कुबलयापीड हाथी को मारा। चाणूर और मुष्टिक पहलवानों को मारा। उसके बाद कंस को मारा तथा वसुदेव-देवकी को बंध से छुड़ाया। यह चार दिन की लीला है। इसके बाद भगवान विष्णु के (तेइसवें) अवतार की लीला है।

अब आई बात हद की, हिसाब चौदे भवन।
सब बात इत याही की, कहे अटकलें और वचन।। २० ।।

यहां से हद के क्षर पुरुष विष्णु की लीला है। चौदह लोकों के ज्ञानी इन्हीं श्री कृष्ण का वर्णन करते हैं। निराकार के ऊपर की बात अपने अनुमान से ही कहते हैं।

जुध किया जरासिंधसों, रथ आयुध आए खिन मांहें।
तब कृष्ण विष्णु मय भए, बैकुंठ में विष्णु तब नांहें।। २१ ।।

जब जरासिन्ध से युद्ध किया, उस समय बैकुण्ठ से रथ और शस्त्र एक क्षण में मंगवा लिए। तब श्री कृष्ण पूर्ण भगवान विष्णुमयी रूप हो गए जो अवतार कहलाते हैं। उस समय भगवान विष्णु बैकुण्ठ में नहीं थे।

Nijanand App

बैकुंठ थें जोत फिर आई, सिसुपाल किया हवन।
मुख समानी श्रीकृष्ण के, यों कहे वेद वचन।। २२ ।।

शिशुपाल को मारा। उसका जीव बैकुण्ठ गया, परन्तु वहां भगवान विष्णु के न होने से जीव पुनः वापस आया और श्री कृष्ण के मुख में समा गया ऐसा यहां के सब ग्रन्थ कहते हैं।

किया राज मथुरा द्वारका, बरस एक सौ और बार।
प्रभास सब संघार के, जाए खोले बैकुंठ द्वार।। २३ ।।

इस भगवान विष्णु के अवतार श्री कृष्ण ने मथुरा तथा द्वारिका में एक सौ बारह वर्ष राज्य किया। अपने ही यदुवंशियों को मारकर स्वयं बैकुण्ठ पधारे।

गोप हुता दिन एते, बड़ी बुध का अवतार।
नेक अब याकी कहूं, ए होसी बड़ो विस्तार।। २४ ।।

आज दिन तक बड़ी बुद्धि के अवतार (जागृत बुद्धि के अवतार) अखण्ड बृज रास के आनन्द में ही मगन रहे। अब सम्वत् १७३५ में मेरे हृदय में विराजमान होकर प्रकट हुए, यहां से पल-पल में तारतम वाणी की वृद्धि (फैलाव) हो रही है।

कोइक काल बुध रास की, लई ध्यान में सकल।
अब आए बसी मेरे उदर, वृध भई पल पल।। २५ ।।

चार हजार छः सौ साठ वर्ष तक जागृत बुद्धि अखण्ड बृज रास के आनन्द में ही मगन रही। अब सम्वत् १७३५ में मेरे हृदय में विराजमान होकर प्रकट हुई। यहां से प्रत्येक पल तारतम वाणी की वृद्धि (फैलाव) हो रही है।

अंग मेरे संग पाई, मैं दिया तारतम बल।
सो बल ले वैराट पसरी, ब्रह्मांड कियो निरमल।। २६ ।।

मेरे अंग में जागृत बुद्धि आई तो मैंने उसे तारतम (नूर) की शक्ति प्रदान की। अब उस शक्ति से जागृत बुद्धि का ज्ञान फैलाकर इस ब्रह्माण्ड के अज्ञान के अन्धकार को दूर किया।

दैत कालिंगा मार के, सब सीधा होसी तत्काल।
लीला हमारी देखाए के, टालसी जम की जाल।। २७ ।।

कलियुगी अज्ञानता के दैत्य (राक्षस) को मारा और परमधाम की अखण्ड लीला का ज्ञान देकर यमराज के बन्धन (आवागमन के चक्कर) से मुक्ति दिलाकर सब संसार को भवसागर पार करने का सुगम रास्ता दिखाया।

दैत ऐसा जोरावर, देखो व्याप रह्या वैराट।
काम क्रोध अहंकार ले, सब चले उलटी बाट।। २८ ।।

यह कलियुग रूपी अज्ञानता का दैत्य बड़ा शक्तिशाली है। यह सारे वैराट के मानव के अन्दर बैठा है। इस संसार के जीव काम, क्रोध और अहंकार के वश में होकर उलटा रास्ता चलते हैं।

याको संघारसी एक सब्दसों, बेर ना होसी लगार।
लोक चौदे पसरसी, इन बुध सब्दको मार।। २९ ।।

जागृत बुद्धि के एक शब्द की मार से यह कलियुगी अज्ञानता का दैत्य समाप्त हो जाएगा। इसे मारने में तथा चौदह लोकों में जागृत बुद्धि के ज्ञान फैलने में एक पल भी नहीं लगेगा।

Nijanand App

वैराट सारा लोक चौदे, चले आप अपनी मत।
मन माने खेलें सब कोई, ग्रास लिए असत।। ३० ।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड के सारे जीव अपने ही अज्ञान के अन्धकार में भटकते हैं तथा अज्ञान के कारण ही मनमाने रूप से खेलते हैं।

मैं मारूं तो जो होए कछुए, ना खमें हरफ की डोट।
मेरी बुधें एक लवे से, ऐसे मरे कोटान कोट।। ३१ ।।

महामतिजी कहते हैं कि इस अज्ञान रूपी कलियुगी दैत्य का कुछ रूप नहीं है। अगर कुछ रूप होता तो मैं इसे मार देती। यह तो मेरे जागृत बुद्धि के ज्ञान के एक शब्द की चोट भी सहन नहीं कर सकता। मेरी बुद्धि की जरा-सी चोट से अर्थात् हुक्म से ऐसे करोड़ों कलियुग समाप्त हो जाते हैं।

उठी है बानी अनेक आगम, याको गोप है उजास।
वैराट सनमुख होयसी, बुध नूर के प्रकास।। ३२ ।।

पहले लोगों ने जागृत बुद्धि के ज्ञान की बड़ी-बड़ी भविष्यवाणियां कही हैं, किन्तु अभी तक जागृत बुद्धि का यह ज्ञान छिपा ही रहा। अब यह ज्ञान सारे संसार में फैल जाएगा और अज्ञानता मिट जाएगी।

चलसी सब एक चालें, दूजा मुख ना बोले वाक।
बोले तो जो कछू होए बाकी, फोड़ उड़ायो तूल आक।। ३३ ।।

फिर सभी एक परब्रह्म अक्षरातीत के पूजक बन जाएंगे। फिर किसी और का नाम भी नहीं लेंगे। क्योंकि आक के फल को तोड़कर तूल (रुई) जैसे उड़ा दिए हैं, अर्थात् अज्ञानता सब मिटा दी है और अब कुछ शेष नहीं रहा।

अब एह वचन कहूं केते, देसी दुनियां को उद्धार।
मेरे संग आए बड़ी निध पाई, सो निराकार के पार।। ३४ ।।

अब जागृत बुद्धि की वाणी की कहां तक कहूं, यह दुनियां का उद्धार करेगी। इस जागृत बुद्धि ने मेरा साथ पाने से बड़ी अखण्ड शक्ति निराकार के पार का तारतम (नूर) ज्ञान पाया।

पार बुध पाए पीछे, याको होसी बड़ो मान।
अछर नेक ना छोड़े न्यारी, ए उदयो नेहेचल भान।। ३५ ।।

पार के तारतम ज्ञान की शक्ति पाने से इस जागृत बुद्धि का मान बढ़ गया। यह ऐसा अखण्ड ज्ञान का सूर्य उदय हुआ कि अब अक्षर ब्रह्म इसे एक पल के लिए भी नहीं छोड़ेंगे।

अवतार जो नेहेकलंक को, सो अश्व अधूरो रह्यो।
पुरुख देख्यो नहीं नैनों, तुरी को कलंकी तो कह्यो।। ३६ ।।

शास्त्रों ने नेहेकलंक (निष्कलंक) अवतार होने की घोषणा की थी और घोड़े पर सवार न होने से अधूरा बताया था, क्योंकि किसी ने भी घोड़े पर सवार होने वाले पुरुष को नहीं देखा था, इसलिए घोड़े को कलंकी कहा गया। हे साथजी! श्री देवचन्द्रजी महाराज को बृज, रास और धाम का ही ज्ञान था, जागनी की सुध नहीं थी, इसलिए अवतार अधूरा रहा और प्रमाण के लिए चौपाई—

सुन्दरबाईऐं देखिया, दिल के दीदों मांहें।
बृज रास और धाम की, पर जागनी की सुध नाहें।

(सनन्ध ४१/१६)

Nijanand App

यों उनहत्तर पातियां, लिखियां धाम धनी पर।
तब सैयां हम भी लिखी, पर नेक न दई खबर।।

(सनन्ध ४१/२२)

इसलिए उनको विजयाभिनन्द बुध निष्कलंक अवतार का दर्जा प्राप्त नहीं हुआ। यह कार्य श्री प्राणनाथजी ने किया, इसलिए वह विजयाभिनन्द बुध निष्कलंक अवतार कहलाए।

अवतार या बुध के पीछे, अब दूसरा क्यों कर होए।
विकार काढ़े विश्व के, सब किए अवतार से सोए।। ३७ ।।

अब सम्वत् १७३५ में जागृत बुद्धि के अवतार जाहिर हो जाने के बाद दूसरा और कोई अवतार कैसे हो सकता है, क्योंकि इस जागृत बुद्धि ने सारे संसार के अवगुण (संशय) निकाल दिए हैं, इसलिए अब अन्य अवतार का क्या काम, जब सारे काम ही पूरे कर दिए हैं।

अवतार से उत्तम हुए, तहां अवतारका क्या काम।
जहां जमे हुआ सब का, दूजा नेक न राख्या नाम।। ३८ ।।

जब अवतार से भी न होने वाला काम कर दिया है, तो अवतार की अब आवश्यकता ही क्या है? क्योंकि जागृत बुद्धि (परा शक्ति) ने दूसरा कोई ज्ञान छोड़ा ही नहीं। इसके अन्दर सब ज्ञान आ गए हैं।

जहां पैए पाए पार के, हुआ नेहेचल नूर प्रकास।
तित अगिए अवतार में, क्या रह्या उजास।। ३९ ।।

जागृत बुद्धि ने पार के रास्ते बता दिए और अखण्ड ज्ञान का सूर्य उदय हो गया। सूर्य उदय होने के बाद में जुगनू के समान चमकने वाले बैकुण्ठ के अवतारों की क्या महत्ता होगी?

समझियो तुम या बिध, अवतार ना होवे अन।
पुरुख तो पेहेले ना कह्यो, विचार देखो वचन।। ४० ।।

हे सुन्दरसाथजी! इस प्रकार से तुम स्पष्ट समझ लेना कि अब और कोई दूसरा अवतार नहीं होगा। पहले घोड़े के ऊपर अर्थात् श्री देवचन्द्रजी के तन में राजजी महाराज के स्वयं जाहिर न होने के कारण से घोड़ा अधूरा कहा गया है जो अब महामति के तन से सम्वत् १७३५ में जाहिर हो गया है। इन वचनों का जरा विचार कर देखो।

।। प्रकरण ।। १८ ।। चौपाई ।। ४७१ ।।

गोकुल लीला

जिन किनको धोखा रहे, जुदे कहे अवतार।
तो ए किनकी बुधें विष्णु को, जगाए पोहोंचाए पार।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथ! किसी को किसी प्रकार का संशय न रहे, इसलिए मैंने अलग-अलग अवतारों का वर्णन किया है। अब यह विचार करने की बात है वह कौन सी जागृत बुद्धि का अवतार है जो भगवान विष्णु को भी जागृत करके भवसागर से पार करके अखण्ड करेगा।

Nijanand App